July
September 25
Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009
Vol - 1
Issue - 3

भारतीय चित्रकला में कृष्ण भक्ति का चित्रण

भक्ति अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक, ललितकला
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

भारतीय कला परंपरा में अध्यात्म और भक्ति का गहरा संबंध है। विशेषकर कृष्ण भक्ति ने साहित्य, संगीत, नृत्य और चित्रकला के क्षेत्र में अद्वितीय प्रभाव छोड़ा है। विशेष रूप से चित्रकला में कृष्ण भक्ति का चित्रण अद्वितीय सौंदर्य और भावनात्मकता का परिचायक है। कृष्ण को बालक, प्रेमी, मित्र, दार्शनिक और योगेश्वर के रूप में चित्रित किया गया। उनकी बाल लीलाएँ, माखन चोरी, रासलीला, गोवर्धनधारण, गीता उपदेश आदि प्रसंग भारतीय चित्रकला के लिए मुख्य विषय बने।

राजस्थानी, पहाड़ी और मुगल चित्रकला शैलियों में कृष्ण चित्रण की अपनी विशेषताएँ रहीं। लोककला और आधुनिक कला ने भी कृष्ण को विविध रूपों में प्रस्तुत किया। यह शोधपत्र इन सभी आयामों का गहन अध्ययन करता है और स्पष्ट करता है कि भारतीय चित्रकला में कृष्ण भक्ति केवल धार्मिक आस्था का प्रतिबिंब नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और सौंदर्यात्मक चेतना का जीवंत स्रोत भी है। किस प्रकार कलाकारों ने कृष्ण को प्रेम, करुणा, सौंदर्य और दार्शनिक चेतना का प्रतीक मानकर चित्रित किया और लोक व शास्त्रीय कला धाराओं में इसे किस रूप में प्रस्तुत किया गया।

बीज शब्द

भारतीय चित्रकला, कृष्ण भक्ति, भक्ति आंदोलन, राजस्थानी लघुचित्र, पहाड़ी चित्रकला, मुगल शैली, लोककला, समकालीन कला।

प्रस्तावना

भारतीय कला का मूल स्वर सदैव अध्यात्म और भक्ति रहा है। भारतीय संस्कृति में भगवान कृष्ण का स्थान अद्वितीय है। वे केवल धार्मिक देवता ही नहीं, बल्कि एक ऐसे सांस्कृतिक नायक हैं जिनके जीवन और लीलाओं ने कला, साहित्य और समाज को गहराई से प्रभावित किया। भागवत पुराण, महाभारत, हरिवंश पुराण और गीत गोविंद जैसे ग्रंथों ने कृष्ण के जीवन

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

को विविध आयामों में चित्रित किया। भारतीय चित्रकला केवल रूपांकन या रंग संयोजन की कला नहीं है, बल्कि यह भावनाओं और अध्यात्म की अभिव्यक्ति भी है। भगवान श्रीकृष्ण भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना में प्रेम, करुणा और भक्ति के प्रतीक हैं। वे बाल रूप में माखनचोर, किशोरावस्था में मुरलीधर तथा यौवन में रासलीला के नायक के रूप में चित्रित किए गए।

भक्ति आंदोलन के समय कृष्ण भक्ति विशेष रूप से लोकप्रिय हुई। इस काल में सूरदास, मीराबाई और अन्य संत कवियों की काव्य रचनाओं ने कृष्ण के जीवन के विविध प्रसंगों को अमर कर दिया, जिनका सीधा प्रभाव चित्रकला पर पड़ा। चित्रकारों ने काव्य और संगीत से प्रेरणा लेकर कृष्ण को प्रेममय, लीलामय और भक्तिरस से परिपूर्ण रूपों में प्रस्तुत किया। यह शोधपत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि कैसे भारतीय चित्रकला की विभिन्न शैलियों ने कृष्ण भक्ति को स्वरूप दिया और किस प्रकार यह परंपरा आज तक जीवित है।

उद्देश्य

1. भारतीय चित्रकला में कृष्ण भक्ति के चित्रण की परंपरा का ऐतिहासिक विश्लेषण।
2. राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल और लोककला शैलियों में कृष्ण विषयक चित्रों की विशेषताओं का अध्ययन।
3. कृष्ण भक्ति साहित्य और चित्रकला के परस्पर संबंध को स्पष्ट करना।
4. समकालीन कला में कृष्ण भक्ति के चित्रण की प्रासंगिकता को प्रस्तुत करना।
5. कला और समाज के बीच कृष्ण भक्ति चित्रण की सांस्कृतिक प्रासंगिकता को उजागर करना।
6. कृष्ण भक्ति और भक्ति आंदोलन का चित्रकला पर प्रभाव स्पष्ट करना।

शोध विधि

इस शोधपत्र की रचना ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है।
प्राथमिक स्रोत: भागवत पुराण, गीत गोविंद, सूरसागर, महाभारत, हरिवंश पुराण, गीतावली आदि का विश्लेषण।
द्वितीयक स्रोत: कला इतिहास की पुस्तकें, शोधपत्र, संग्रहालय कैटलॉग, ऑनलाइन कला अभिलेखागार।

प्राचीन पांडुलिपियों, गुफा चित्रों और लघुचित्रों का अध्ययन।
भारतीय चित्रकला की प्रमुख शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध विस्तार

कृष्ण भक्ति और भारतीय कला परंपरा

कृष्ण केवल देवता नहीं बल्कि सांस्कृतिक आदर्श हैं। बाल रूप में माखनचोरी, कालियादमन, गोपाल के रूप में देखा गया है। वहीं किशोर रूप में मुरलीधर और राधा-कृष्ण रासलीला कर मोहित किया है। दार्शनिक रूप में गीता उपदेश को दिया है। भक्ति आंदोलन ने कृष्ण भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। चित्रकारों ने इसे साहित्य से प्रेरणा लेकर दृश्य रूप में प्रस्तुत किया। सूरदास की कृष्ण लीला कविताओं ने लघुचित्रकारों को गहरे रूप से प्रभावित किया।

प्राचीन भारतीय कला में कृष्ण चित्रण

अजंता की गुफाओं में भले ही बौद्ध कथाएँ अधिक मिलती हैं, किंतु गुप्तकालीन मूर्तिकला और चित्रों में कृष्ण कथाएँ दिखाई देने लगती हैं। भागवत पुराण और हरिवंश पुराण की कथाओं के आधार पर कृष्ण के बाललीला, रासलीला और कुरुक्षेत्र उपदेश चित्रित किए गए।

मुगल चित्रकला और कृष्ण भक्ति

अकबर ने संस्कृत ग्रंथों का फ़ारसी अनुवाद कराया। इससे कृष्ण कथाएँ दरबारी चित्रकारों तक पहुँचीं। अकबर और जहाँगीर के दरबार में चित्रकारों ने धार्मिक ग्रंथों का चित्रण किया। मुगल शैली में प्राकृतिक दृश्यों और परिदृश्यों की यथार्थता प्रमुख रही। कृष्ण को परिष्कृत रूप में, विस्तृत पोशाकों और राजसी परिदृश्यों में चित्रित किया गया। कृष्ण विषयक चित्र विशेषकर भागवत पुराण और गीत गोविंद पर आधारित हैं।

राजस्थानी चित्रकला और कृष्ण चित्रण

राजस्थानी लघुचित्रों में कृष्ण भक्ति सर्वोपरि विषय रहा। मेवाड़, बूंदी, कोटा, किशनगढ़ आदि राजस्थानी शैलियों में रासलीला, यमुना तट पर बांसुरी बजाते कृष्ण, राधा-कृष्ण मिलन आदि दृश्य अत्यंत लोकप्रिय रहे। किशनगढ़ शैली में बानी ठनी और कृष्ण का चित्रण भक्ति और प्रेम का आदर्श रूप है।

पहाड़ी चित्रकला और कृष्ण भक्ति

कांगड़ा और गढ़वाल की पहाड़ी शैली में कृष्ण-राधा की लीलाओं को कोमल रंगों और प्राकृतिक दृश्यों के साथ चित्रित किया गया। 17वीं-18वीं शताब्दी में हिमाचल और कांगड़ा घाटी में कृष्ण विषय पर आधारित लघुचित्रों की रचना हुई। यहाँ पर प्राकृतिक पृष्ठभूमि (नदियाँ, पर्वत, फूल-पत्तियाँ) और रंगों की कोमलता विशेष रही।

लोककला में कृष्ण चित्रण

मधुबनी चित्रकला (बिहार) में कृष्ण और राधा की कथाएँ। पटकथा चित्रकला (बंगाल) और पिथोरा चित्रकला (मध्यप्रदेश) में भी कृष्ण प्रसंग। पिथोरा (मध्यप्रदेश) और वारली (महाराष्ट्र) कला में भी कृष्ण विषयक चित्र मिलते हैं। लोक कलाकारों ने कृष्ण को ग्रामीण जीवन और लोक संस्कृति से जोड़ा।

आधुनिक और समकालीन कला में कृष्ण भक्ति

आधुनिक कलाकार जैसे एन.एस. बेन्द्रे, जमिनी रॉय, एम.एफ. हुसैन आदि ने भी कृष्ण विषय को नए रूप में चित्रित किया। डिजिटल आर्ट और समकालीन पेंटिंग्स में कृष्ण का चित्रण भक्ति और सांस्कृतिक पहचान दोनों रूपों में जारी है। समकालीन डिजिटल आर्ट और इंस्टॉलेशन आर्ट में भी कृष्ण विषय सक्रिय है।

कृष्ण भक्ति चित्रण की सांस्कृतिक प्रासंगिकता

कृष्ण भक्ति ने चित्रकला को केवल धार्मिक विषय तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे प्रेम, सामाजिकता और अध्यात्म का रूप दिया।लोककला और शास्त्रीय कला दोनों में कृष्ण ने लोकप्रियता और कलात्मक प्रयोगशीलता प्रदान की। आज भी मंदिर, संग्रहालय और दीर्घाएँ कृष्ण चित्रण से समृद्ध हैं।

निष्कर्ष

भारतीय चित्रकला में कृष्ण भक्ति का चित्रण केवल धार्मिक आस्था का नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और सौंदर्यात्मक चेतना का प्रतीक है। भारतीय चित्रकला में कृष्ण भक्ति का चित्रण शताब्दियों से कलाकारों की प्रेरणा का स्रोत रहा है। राजस्थानी और पहाड़ी लघुचित्रों में कृष्ण का चित्रण भावुकता और माधुर्य का अद्वितीय उदाहरण है, वहीं लोककला में यह ग्रामीण जीवन से जुड़ा हुआ दिखता है। भक्ति आंदोलन ने इसे जन्जन तक पहुँचाया और चित्रकारों ने इसे अमर कर दिया। राजस्थानी और पहाड़ी लघुचित्रों में कृष्ण चित्रण माधुर्य और सौंदर्य का शिखर है, वहीं लोककला ने इसे सरल और जनसुलभ बनाया। आधुनिक कलाकारों ने कृष्ण विषय को नए

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

आयाम दिए, जिससे यह सिद्ध होता है कि कृष्ण भक्ति केवल परंपरा नहीं, बल्कि निरंतर विकसित होती सांस्कृतिक धारा है। भारतीय चित्रकला का इतिहास कृष्ण के बिना अधूरा है। आधुनिक युग में भी कृष्ण भक्ति कला में जीवंत है और समकालीन कलाकार इसे नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. भागवत पुराण।
2. महाभारत।
3. जयदेव, गीत गोविंद।
4. सूरदास, सूरसागर।
5. शर्मा, रमेश, भारतीय कला का इतिहास।
6. चंद्र, प्रमोद, Indian Art.
7. कोहली, एम. एस., राजस्थानी मिनिएचर्स।
8. गजपति, के. पी., कांगड़ा पेंटिंग्स एंड गीत गोविंद।
9. राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली - प्रदर्शनी कैटलॉग।
10. राजस्थान और कांगड़ा आर्ट म्यूज़ियम अभिलेख।
11. विभिन्न संग्रहालय कैटलॉग : नेशनल म्यूज़ियम (दिल्ली), राजस्थान संग्रहालय, कांगड़ा आर्ट म्यूज़ियम

aryavart
Journal of Multidisciplinary Research